DATE 14.10.24
PAGE No 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा') भाग 1

पुस्तक - नवतरंग-7

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

आज हम कक्षा-7 की पुस्तक नवतरंग के पृष्ठ-81 पर दिए पाठ-10 'नमक का दारोगा' को पढ़ेंगे। सब बच्चे अपनी पुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका खोलकर रखेंगे। शब्दों के अर्थ और प्रश्नोत्तर पूछती जाऊँगी। सब बच्चे लिखने का कार्य साथ-साथ करेंगे।

यह पाठ मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित है। मुंशीजी हिंदी साहित्य के जाने-माने कहानीकार, उपन्यासकार तथा सामाजिक साहित्यकार थे। इस कहानी में शक्तिशाली धन राजधर्म के आगे झुकता है और ईमानदारी को सम्मान प्राप्त होता है। 'दारोगा' पुलिस विभाग में उपनिरीक्षक पद होता है। अब हम कहानी को पढ़ना शुरू करते हैं।

जब नमक का नया विभाग बना तो लोग इसका चोरी-छिपे व्यापार करने लगे। कोई रिश्वत देकर काम करवाता तो कोई चालाकी से। इस विभाग में अधिकारियों की पाँचों उँगलियाँ घी में थीं। नमक विभाग में दारोगा बनने के लिए वकीलों का भी जी ललचाता था। मुंशी वंशीधर नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित थे जो कि इस कहानी के मुख्य पात्र हैं। यह कहानी उन्हीं पर आधारित है।

मुंशी वंशीधर जिस दफ़्तर में काम करते थे, उसके एक मील पूर्व की ओर जमुना नदी बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No 2

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा')

किस गहरी नींद में सो रहे थे कि अचानक उन्हें गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा नाविकों का शोर सुनाई दिया वि उठकर बैठ गए और सोचने लगे इतनी रात गए गाड़ियाँ नदी के पार क्यों जा रही हैं? अवश्य ही कुछ गोलमाल (गड़बड़) है। उन्होंने वरदी पहनी, तमंचा जेब में रखा और शीघ्र ही पुल पर आ पहुँचे। पुल के पार गाड़ियों की एक लंबी कतार जाती देखी। उन्होंने डाँटकर पूछा, "किसकी गाड़ियाँ हैं?" थोड़ी देर के लिए सन्नाटा (शांति) छा गया। आदमियों में कानाफूसी हुई तब आगे वाले आदमी ने कहा, "पंडित अलोपीदीन की।"

मुंशी वंशीधर चौंके। अलोपीदीन उस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। वे लाखों का लेन-देन करते थे। छोटे से बड़े सभी उनके ऋणी (कर्ज़दार) थे।

मुंशी जी ने उनसे पूछा, "गाड़ियाँ कहाँ जाएँगी?" उत्तर मिला, "कानपुर!" यह पूछने पर कि इन बोरों में क्या है? इसका जब उन्हें कोई उत्तर न मिला तो उन्होंने एक बोरे को टटोला। उसमें नमक के डेले थे।

पंडित अलोपीदीन अपने सजे सुंदर रथ पर सवार, कुछ सोते, कुछ जागते चले आ रहे थे तभी कई गाड़ी-वानों ने घबराए हुए उन्हें बताया कि दारोगा जी ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े हैं, आपको बुला रहे हैं। पंडित अलोपीदीन को लक्ष्मी जी अर्थात् अपने धन पर अखंड विश्वास था। उन्हें लगता था कि वे धन से सब कुछ खरीद सकते हैं। उनका मानना था कि वे धन रूपी बल से प्रत्येक ओहदे के व्यक्ति और उसके ईमान-धर्म को खरीद सकते हैं। उन्होंने मुंशी वंशीधर के ओर बड़ी निश्चिंतता के साथ पूछा, "बाबू जी! आपने गाड़ियाँ क्यों रोक दी हैं?" मुंशी जी ने रूखे स्वर में कहा, "सरकारी हुक्म है।"

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No. 3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा')

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए यहाँ आप तीन मिनट का समय लेंगे। प्रश्नोत्तर आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. वंशीधर कौन थे?
प्रश्न-2. मुंशी वंशीधर किस विभाग में नौकरी करते थे? उनके दफ़्तर से पूर्व की ओर कौन-सी नदी बहती थी?
प्रश्न-3. नदी पर पुल किससे बनाया हुआ था और उस पर से होकर किसकी गाड़ियाँ जा रही थीं?
प्रश्न-4. उन गाड़ियों में क्या लदा था?

बच्चो! अब आपके अंतराल का समय समाप्त हुआ। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं —

उत्तर-1. मुंशी वंशीधर मध्यम वर्ग के परिवार से संबंध रखने वाले ईमानदार सरकारी कर्मचारी थे।
उत्तर-2. मुंशी वंशीधर नमक विभाग में दारोगा पद पर प्रतिष्ठित थे अर्थात् नमक विभाग में नौकरी करते थे। उनके दफ़्तर से पूर्व की ओर करीब एक मील दूर यमुना नदी बहती थी।
उत्तर-3. जमुना नदी पर नावों का पुल बनाया हुआ था। उस पुल पर से होकर पंडित अलोपीदीन की नमक से भरी गाड़ियाँ जा रही थीं।
उत्तर-4. उन गाड़ियों में नमक से भरी बोरियाँ लदी हुई थीं।

बच्चो! अब मैं पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ती हूँ —

मुंशी वंशीधर के सरकारी आदेश कहने पर पंडित अलोपीदीन ने उन्हें हँसकर कहा, "न हम सरकारी हुक्म जानते हैं और न सरकार को। हमारे

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No 4

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा')

सरकार तो आप ही हैं। हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं। यह हो नहीं सकता कि हम इधर से जायें और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें।" अलोपीदीन की इस बात का वंशीधर पर कोई प्रभाव न पड़ा। वे कड़क कर बोले," हम उनमें नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप मेरा ईमान पैसे से नहीं खरीद सकते। आप इस समय हिरासत में हैं। जमादार बदलूसिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ।"

बच्चो! अब मैं आपसे यहाँ भी कुछ प्रश्न पूछ लेती हूँ जिसे आप तीन मिनट के कालांश में अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. पंडित अलोपीदीन कौन थे? उन्हें धन की शक्ति पर भरोसा क्यों था?

प्रश्न-2. मुंशी वंशीधर ने अलोपीदीन की भेंट चढ़ाने वाली बात का क्या और कैसे उत्तर दिया?

बच्चो! आपका अंतराल का समय समाप्त हुआ। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

उत्तर-1. पंडित अलोपीदीन अपने इलाके के सबसे प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। वे लाखों रुपए का लेन-देन करते थे। छोटे से बड़े ऐसे कौन थे जो उनके ऋणी (कर्ज़दार) न हों।

उत्तर-2. मुंशी वंशीधर ने अलोपीदीन की भेंट चढ़ाने वाली बात का उत्तर कड़कती आवाज़ दिया कि हम उनमें से नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेच दें। आप इस समय हिरासत में हैं।

बच्चो! इस पाठ को हम यहीं तक पढ़ेंगे। शेष भाग अगले सप्ताह-- पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य:- सब बच्चे पृष्ठ-86 पर दिए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

(अंतिम पृष्ठ - 4)

Scanned with CamScanner